मन के इंद्रधनुष को पुकारें

जीवन रूपी पुल को पार करनेवाले
धरती के पुतले हैं हम
कभी होते हैं पल हँसनेवाले
कभी दरवाज़े पर आती है गम
जन्म से यहाँ हम नाटक करते आ रहे हैं
अलग-अलग हालत का हम मंचन करते रहे हैं
कभी क्रोध का विष हमपर हावी होते
कभी आँखों से नदिया है बहते
हर सुबह गगन लाल बिंदिया है लगाती
और सागर में देख अपने सुन्दरता पे शरमाती
वह नारी जब आँखे झुकाके जो हँसती
पूरी दुनिया ही रोशन हो जाती
उस नारी का अंत करने
शाम को आता है कोई
एक तो है प्रजापति रावण
और बाकी उसके सिपाही
सब कहे ~~सब~~ रावण तो है एक दुष्ट नायक
किसीने देखा नहीं उसके भीतर चमक
रावण भी एक दिन पचताया

~~मन के इंद्रधनुष को पुकारें~~

और उसके चमक दुनिया को दिखाया
इस जीवन के हैं कई सीढ़ी
इसे चढ़कर ही हैं पार करनी
कभी चढ़ते हैं हम सीधे-सीधे
कभी फिसलकर नीचे भी गिरते
गिरते ही हम अकसर बन जाते हैं रुआसी
और भूल जाते हैं यह दुनिया सारी
धीरे-धीरे मन का इंद्रधनुष ढलने लगते हैं
और अंधकार का साया चढ़ने लगते हैं
जब भर-भर कर पानी हैं बरसते
मन ही मन डर फैलते हैं जाते
लगा जब सब तबाह होने हैं वाले
इंद्रधनुष का रंग प्रतीक्षा हैं लाते
कभी शांत समुद्र में भी पड़ती है तूफान
जैसे जीवन में मुशकिलों का बहार
लेकिन याद रखें, सवार फिरसे हसती हैं
और भीतर के इंद्रधनुष को कायम रखती हैं
जब जिन्दगी में लहर पड़ती हैं
उसमें मन भी लहराने लगती हैं

लगता है तब, सब कुछ खो गया है
अब जीवन में कुछ भी नहीं बचा है
अगर ईश्वर ने समस्या बनाई है
तो उसका हल भी जरूर कहीं छोड़ा है
और हमसे कहते रहते हैं
"जब दुःख में डूबने लगो
तो मन के इंद्रधनुष को पुकारो"